: अनवर सुहैल :

गुमशुदा चेहरे

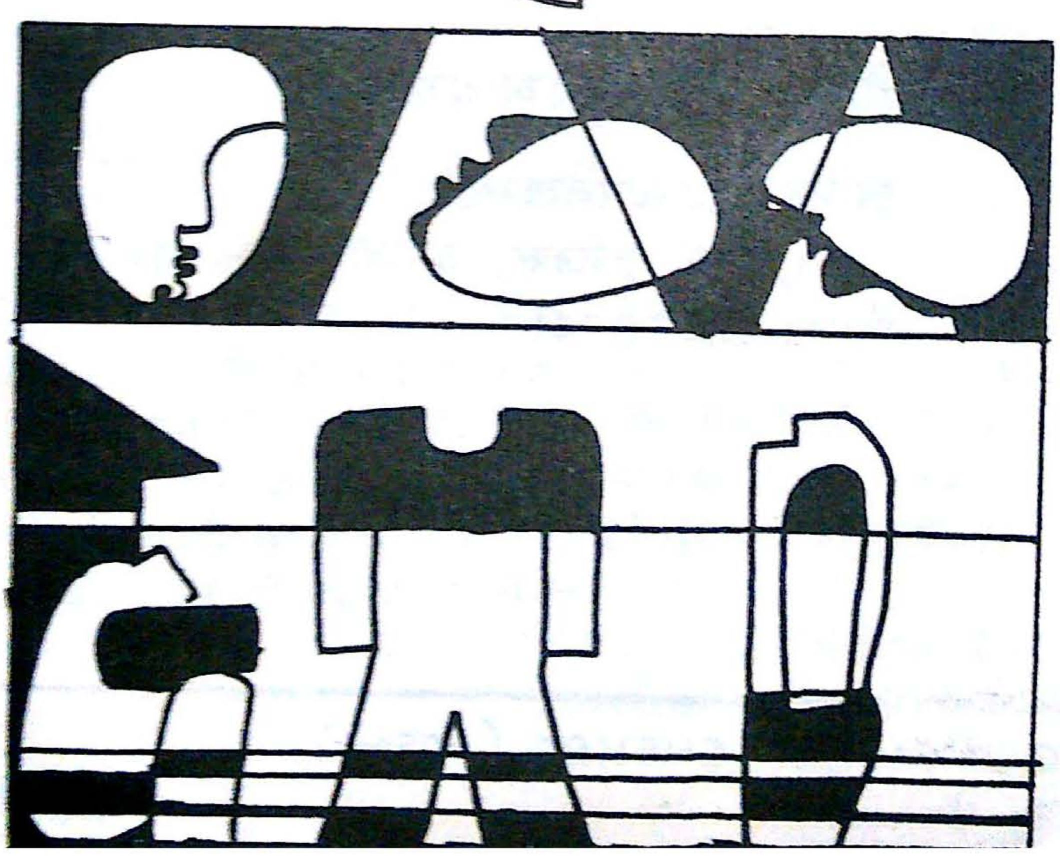

नए कवि की सोच

आज का कवि कोई कलावन्त केशों वाला प्रकृति का चितेरा नहीं है। उसका समाज, उसकी चिन्ताएं भिन्न हैं। वह सर्वहारा है या सर्वहारा का प्रतिनिधि है?! उपदेशक है या नए भावबोध का चिन्तक अथवा कोरा दार्शनिक!!!

दर असल नया कवि प्रकृति से दूर होता चला गया है और छापाखाने के ज्यादा समीप। इसीलिए उसकी अधपकी सोच का ग्राफ जस-तस छप जाता है। वह अपने दिमागी कारखाने में पड़े विचारों को 'कच्चेमाल' की तरह ही ज्यादा पेश करता है। वह इन विचारों को समाज के द्वंद की भट्ठी में तपने को अवसर ही नहीं देता। फिर भी वह संघर्षशील है। तो उसका संघर्ष किससे है, किसके लिए है - यह इस नए कथित सर्वहारा कवि के लिए भी विचारणीय है। वह समाज के अनुभवों से सम्पन्न नहीं है और फिर भी छापाखानों के भरोसे हर सप्ताह पत्र-पत्रिकाओं में छप रहा है तो वह खुद को ही छल रहा है।

ऐसा नहीं है कि यह स्थिति सभी नए कवियों की हो पर ज्यादातर कवियों ने तो अपने को छापाखाने का कवि ही सिद्ध किया है। नए कवि की भूमिका स्पष्ट नहीं है। वह अर्थवान-सन्यों के उद्‌घाटन में भी जल्दबाजी दिखा रहा है। यह नया कवि अपनी सोच के विस्तार और अनुभव की अपनी सीमाओं को परखने में संकोच करता रहा है लकिन इस संग्रह का कवि अपने भाव, उद्‌बोधन, सपाट कथन में अपनी बेचैनी और ईमानदारी का अहसास जरूर कराता है।

नई सोच का यह विस्तार चमत्कृत करने के लिए नहीं है। तब भी कवि का दायित्व है कि वह मौजूदा परिस्थितियों में अपनी भूमिका को ज्यादा धारदार होकर विवेचित करें। पर पहले उसे वह स्पष्ट करे।

ऐसे नए कवियों के पास शब्दबोध है। चिन्तन की अनन्त मुद्रायें हैं। परंतु इतने से सोच की धुंध नहीं छंट पाती। यह इस कवि को भी सोचना है। जो आम आदमी की इबारत पढ़ने की कोशिश में लगा है। आम आदमी की विवशताओं को वह देख पा रहा है। लेकिन कविता के गंभीर पाठक के साथ उसकी चिन्तना को रेचन तभी होगा जब नए कवि की ये कोशिशें सतही नहीं रह जाएंगी। यथार्थ को कई स्तरों पर उद्‌घाटित करने की इस कवि की क्षमताएं उसकी गहरी दृष्टि का परिचय दे, यही जरूरी है। कविता की प्रथम पुस्तक के प्रकाशन पर एक और नए कवि का स्वागत!!

– डॉ. अशोक जैन

सम्पादक 'सहज आनन्द' दिल्ली

दर्द और संवेदनाओं का दस्तावेज़

❑ श्याम सुन्दर चौधरी

व्यक्ति के जन्म से मृत्यु के बीच ढेरों सपने अपना वजूद पाने के लिए उसे अन्दर ही अन्दर मथते रहते हैं और वह उन सपनों की सार्थकता के लिए हर पल एक-एक लड़ाई लड़ता है। किन्तु उसकी साधनहीनता, उसका खास न होकर आम होना उसके सम्मुख सबसे बड़े बाधक बन जाते है।

बचपन में गुरुजनों से जिस सत्य और ईमानदारी का पाठ पढ़ता है, आगे चलकर अपने सामने उन सबकी चिता जलते देखता है और उसके ऊपर खड़े असत्य, धूल, बेईमानी को अट्टहास करते देखता है। प्रगति के शिखर पर पहुंचने की खुशफहमी में जीने वाली शक्तियों को भूख से बिलबिलाते अस्थिपंजर-समान बच्चों की आंखों से झांकती कातरता दिखाई नहीं देती है। 'गुमशुदा चेहरे' इन्हीं तमाम दर्द और संवेदनाओं का एक दस्तावेज है।

परिश्रम इंसान को उसकी मंजिल तक पहुंचा सकता है। हाथों की रेखाओं में उलझकर या भाग्य के भरोसे ही रहकर कुछ पा लेना चमत्कार हो सकता है, सत्य नहीं।

हाथों में गड्ढे बनने दें/ पैरों में छाले उगने दें/ उखड़े दम से सांस / आये मंजिल पास। – (हम सब)

हमारी मेहनतों सी/काढ़ा हुई चाय/जब हम पिए/खूब खूब जिए। – (कम सेप्टेम्बर)

आर्थिक अभावग्रस्तता में जकड़े परिवार की गाथा को 'घूम आई अंखियां' गीत में कवि ने प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। गीत की चंद खूबसूरत पंक्तियां स्वयं ही कवि की प्रखर कल्पनाशीलता को प्रमाणित करती है।

कच्ची दीवारें गलती जाएं/बरखा बैरन खाट भिजाए/जले न चूल्हा तन जल जाए। – (घूम आई अखियां)

बड़े बड़े रहनुमाओं की बड़ी बड़ी घोषणाएं सिर्फ एक मायाजाल से अधिक और कुछ नहीं लगती हैं। उसके कान तो हर घर में खाली हंडिया में कलछल की खनखनाहट सुनने के अभ्यस्त हो चुके है। दिन भर अपने शरीर को गलाने के बाद भी सुख और शान्ति जैसी चीजें व्यक्ति की पहुंच से काफी दूर है।

उस पार का अनन्त आकाश/स्वप्न ही तो है/कान/सुनते हैं सिर्फ/खाली हंडिया में/कलछल की खनखनाहट। –(संज्ञाहीन)

भूख और प्यास से मर रहे युथोपियाई लोगों को देखकर कवि करुणा से भर उठता है और अपनी रचना, अपने सृजन द्वारा उन लोगों के अन्धकार से भरे जीवन को प्रकाशमय बनाना चाहता। वह अपने कलम को तब तब करुणा के साथ चलते देखता है जब यह ऐसी हारी हुई जिन्दगी जीते हुए लोगों की व्यथा को शब्द देता है।

जब कभी कोई नज्म/सियासत नफरत से जुदा/पढ़ता लिखता हूं/तुम्हें अपने आस-पास/महसूस करने लगता हूं। – (एक याद)

ईमानदार से ईमानदार इन्सान की सच्चाई भी आज झूठ और बेईमानी की भीड़ में किस कदर खो जाने को मजबूर है। पंगु होती जा रही सच्चाई और झूठमेव जयते का पंजा जिस तरह सत्यता का गला घोटता जा रहा है, कवि उससे आतंकित है। अपने सत्य को जीवित न रख पाने की छटपटाहट के चलते ही वह कागजों से फरियाद करता है कि वे सत्य का इश्तिहार वनकर दिशाहीन भीड़ के सीने पर चिपक जाएं ताकि व्यक्ति के अस्तित्व को सार्थक पहचान मिल सके।

यह फरियाद है तुमसे कागजों/तुम इश्तिहार बन जाओ। –(तलाश)

इन्सानी चेहरे पर चस्पां बनावटी चेहरे में फर्क करना कवि के लिए मुश्किल हो जाता है। सारे रिश्ते स्वार्थ और अवसरवादिता के प्लेटफार्म पर टिके हैं। उसका ऐसे में दम घुटता है। लेकिन वह अपने को पूरी तरह इस जाल में जकड़ा हुआ पाता है। (कविता 'गुमशुदा चेहरे' और बेचैनी'।)

'अपील' कविता के माध्यम से शान्ति की अपील की गई है।

सत्य का क्षय और अभावग्रस्तता की यथास्थिति पर कवि अनवर सुहैल ने विशेष प्रहार किया है। पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों पर कवि की पैनी नजर है।

– (वैचारिकी संकलन से साभार)

सम्मतियाँ

'गुमशुदा चेहरे' की फोटोकापी मिली। कविताएं मैं पढ़ गया। अच्छी हैं आपकी कविताएं इसे जरूर छपवाइए।

–भारत भारद्वाज, 172.5 आराम बाग, नई दिल्ली-55

इसमें निश्चय ही समय को दस्तक देती कविताएं हैं, आपको हमारी हार्दिक शुकामनाएं –

श्री ज्ञानरंजन, 101 रामनगर आधारताल, जबलपुर (म.प्र.)

'गुमशुदा चेहरे' की प्रस्तुति बहुत सुंदर है।

–मणिकामोहिनी, शिवानीअपार्टमेंट्स, इंद्रप्रस्थकालोनी, दिल्ली-92

आपका संग्रह 'गुमशुदा चेहरे' मिला। सभी कविताएं अच्छी हैं। समाज में फैली हुई असंगतियों-विसंगतियों पर आपने अच्छा प्रहार किया है। साथ ही पीड़ा व दर्दों के प्रति चुभन-सी देखने को मिलती है। कुल मिलाकर आपका यह कार्य सराहनीय है। प्रो. अशोक जैन से संपर्क स्थापित करें साथ में इन्हें मेरा संदर्भ भी दें: यह आपकी पुस्तक बहुत अच्छी तरह प्रकाशित हो सकती है।

– राजेन्द्र पटोरिया, सं. खनन भारती, नागपुर

शायद यह 'गुमशुदा चेहरा' इस भीड़, उहापोह, यंत्रणा विसंगति और ज्यादतियों के बीच फंसा है, जिसका विज्ञापन आज करना पड़ रहा है; खोज जारी है, बावजूद असफलता के एक सार्थक दिशा में। लेकिन लेखक किंकर्त्तव्य विमूढ़ कैसे हो सकता है। इसी अस्तित्व की खोज में बेचैन, साक्षी, और भोक्ता एक साथ इन कविताओं में उपस्थित है। यही कारण है कि पीड़ा की सहभागिता, सम्वेदना का मूर्तिकरण और बनावट के इतर एक सजग किन्तु परिष्कार की अपेक्षा के साथ ये कविताएं हमसे रू-ब-रू होने का संकेत देती है। 'मुखौटा' एक आवरण हो सकता है, एक माध्यम और नेपथ्य का झूठ भी लेकिन अंतिम सत्य नहीं। गुणानुक्रम में इनकी हकीकत उजागर हो एक चुस्त प्रयास के तहत। शुभकामनाओं के साथ

–विजय कुमार सं. 'अक्षरा', हिन्दी भवन, शामलाहिल्स भोपाल-2

'गुमशुदा चेहरे' मैंने बहुत शौक से पढ़ा और खुश हुआ। इसमें शामिल कुछ कविताओं ने बहुत ही प्रभावित किया। खासकर 'हम सब' 'गुमशुदा चेहरे' 'बेचैनी' और 'अपील'। इन शानदार रचनाओं के लिए मेरी तरफ से दिली मुबारकबाद कबूल करें।

–खुर्शीद आलम, 48A, सैक्टर-15A, नोएडा-201301

आप रेखांकन एवम् लेखन दोनों ही विधाओं में तरक्की करेंगे।

–शकील सिद्दीकी, समी मंजिल, चाहियागंज, लखनऊ

❑❑❑

अम्मी के लिए

मैं गूंगा नहीं

वह
तुम्हारे गीतों की काशिश थी

या उनके
ज़ुल्मो- सितम की इन्तेहा

मेरे बंजर हुए हलक़ में
आवाज़ की फसल
लहलहा उठी

अब तुम ये मत कहना
कि मैं गूंगा हूँ।